वर्षम् - ०२ अङ्कः - ०२ शोधज्योतिः
जनवरी-दिसम्बर, २०२० ISSN-2350-0700

भानुदत्तकृत रसमञ्जरी की अप्रकाशित विकास टीका की समीक्षा

डॉ. अञ्जना तिवारी[१]

भानुदत्त 'रसमञ्जरी' रससिद्धान्त का विश्लेषणात्मक ग्रन्थ है जिसमें नायिका के भेद, नायिका की सखी, दूती, नायकभेद, नायक के सखा (पीठमर्द, विट, चेट, विदूषक इत्यादि) स्तम्भादि आठ सात्त्विस्क गुण, श्रृङ्गार के भेद, विप्रलम्भ की दस अवस्थायें इत्यादि विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है। रसमञ्जरी में भानुदत्त ने अपने पिता का नाम गणेश्वर और गंगातट पर विदेह नामक गांव को अपना निवास स्थान बताया है -

ततो यस्य गणेश्वरो कविकुलालङ्कारचूडामणिः।
देशो यस्य विदर्भभूः सुरसरित् कल्लोलकिमीरिताः।।

रसमञ्जरी पर निम्न टीकायें उपलब्ध होती हैं।

१.	रसिकरञ्जनी	गोपालभट्ट
२.	परिमल	शेषचिन्तामणि
३.	व्यंग्यार्थकौमुदी	अनन्तपण्डित
४.	विकास	गोपालाचार्य
५.	व्यंग्यार्थकौमुदी	विश्वेश्वर
६.	आमोद	अज्ञात
७.	व्यांग्यार्थदीपिका	आनन्दशर्मन्
८.	रसमञ्जरीप्रकाशः	नागेश भट्ट
९.	भानुभावप्रकाशिनी	महादेव
१०.	रसिकरञ्जन	व्रजराज दीक्षित
११.	आमोद	त्रिविक्रम मिश्र

[१] Assistant Professor, Department of Sanskrit, Pali & Prakrit, Faculty of Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara

१२.	रसमञ्जरीस्थूलतात्पर्य	अज्ञात
१३.	सामञ्जसार्थ दीपिका	अज्ञात
१४.	रसमञ्जरी टीका	गिरिधर भट्ट
१५.	रसमञ्जरी टीका	महेन्द्र भट्ट
१६.	सुरभि	पं. बद्रीनाथ शर्मा
१७.	सुषमा	डॉ. जगन्नाथ पाठक

उपरोक्त टीकाओं में से व्यंग्यार्थकौमुदी अनन्त पण्डित, प्रकाश-नागेश भट्ट (बनारस से सन् १९०४) परिमल शेषचिन्तामणि, रसामोद-त्रिविक्रम भट्ट (अलीगढ से।), सुरभि-पं. बद्रीनाथ शर्मा, सुषमा-जगन्नाथ पाठक (बनारस से १९४१) में प्रकाशित हो चुकी हैं। उपरोक्त ग्रन्थ पर १७ टीका उपलब्ध होना इसका महत्त्व सिद्ध करता है। इनमें से विकास टीका का अध्ययन प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है।

गोपालाचार्यकृत रसमञ्जरी टीका अद्यापि अप्रकाशित है। इसकी हस्तलिखित प्रति (पाण्डुलिपि) प्राच्यविद्या मन्दिर, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा, गुजरात में संरक्षित है। प्राच्यविद्या मन्दिर में इसकी दो प्रतियाँ प्राप्त होती हैं जिनमें -

रसमञ्जरी विकास टीका - १	
पञ्जीकरण संख्या	८१०७
पृष्ठ	१२०
आकार	१२ˣ २६ से. मी.
ग्रन्थ संख्या	२०००
सामग्री	कागज
लिपि	देवनागरी
भाषा	संस्कृत
लेखक	गोपालाचार्य
वर्तमान स्थिति	अच्छी है। शब्द स्पष्टतया पढ़े जा सकते हैं। यद्यपि कुछ पृष्ठ क्षतिग्रस्त भी हुए हैं। यह प्रति पूर्ण है।
समय	उपरोक्त प्रति में समय का उल्लेख नहीं मिलता।

रसमञ्जरी विकास टीका - २	
पञ्जीकरण संख्या	७१८८
पृष्ठ	२३
आकार	१०.५×२५ से.मी.
ग्रन्थ संख्या	७००
सामग्री	कागज
लिपि	देवनागरी
भाषा	संस्कृत
लेखक	गोपालाचार्य
लिपिकार	जोजयरामात्मज हरिजिद
वर्तमान स्थिति	पृष्ठ खण्डित हैं तथा कुछ अक्षर मिट चुके हैं जिससे पढ़ने में थोडी कठिनाई होती है। इसके अक्षर जैनशैली के प्रतीत होते हैं। यह प्रति अपूर्ण है। प्रारम्भ के पृष्ठ उपलब्ध नहीं होते। यह श्लोक संख्या ७१ से प्राप्त होती है परन्तु पाण्डुलिपि में मूलग्रन्थ से संख्याभेद है इस प्रति में ७१ के स्थान पर ७९ संख्या दी है। यद्यपि विषय समान है जिससें स्वाधीनपतिका नायिका का विवरण है।
समय	विक्रम संवत् १७०२, शक संवत् १५६७, १६४५ ई.स.

रसमञ्जरी विकास टीका भानुदत्त की कृति रसमञ्जरी का स्पष्ट एवं सारगर्भित विवेचन है जो कि व्याकरण एवं साहित्य के नियमों के अनुकूल है। स्थान-स्थान पर छन्द एवं अलङ्कारों का उल्लेख मिलता है। इसकी विलक्षणता यह है कि इसमें एक विषय पूर्ण होने पर तथा दूसरे विषय की व्याख्या प्रारंभ करने से पूर्व स्थान-स्थान पर गोपालाचार्य लिखते हैं-

इति रसमञ्जरीविकासे गोपालाचार्यविरचिते.....

इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि गोपालाचार्य कुछ विशेष कहने की अभिलाषा रखते है। कुछ स्थानों पर मूल प्रकाशित ग्रन्थ और टीका में पाठभेद मिलता है।

आलिभिः शपथैरनेककपटैः कुञ्जोदरं नीतया
शून्यं तच्च निरीक्ष्य विक्षुभितया न प्रस्थितं न स्थितम्।
न्यस्ताः किन्तु नवोढनीरजदृशा कुञ्जोपकण्ठे रुषा
ताम्यद् भृङ्ग कदम्बडम्बर चमत्कार स्पृशो दृष्टयः।। (रसमञ्जरी, ५४)

उपरोक्त श्लोक में विकास में मूलपाठ से भेद है। वहाँ कुञ्जोदरं के स्थान पर कुञ्जादर, कुञ्जोपकण्ठे के स्थान पर कञ्जोपकण्ठे तथा कदम्बडम्बरचमत्कार के स्थान पर कदम्बडम्बरमत्कार पाठ मिलता है। उपर्युक्त श्लोक की विकासटीका में गोपालाचार्य लिखते हैं-

आलिभिः सखीभिः अनेक कपटैः अनेक व्याजैः कपटो स्त्रीव्याजदम्भ इत्यमरः शपथैः भाषाविशेषैः कुञ्जोदरं लतागृहमध्यं सङ्केतीहमित्यर्थः। नीतया प्रापितयात लतागृहं शून्यं प्रियरहितं निरीक्ष्य विलोक्य विक्षुभितयो विमनस्कयाप्रियविरहचिन्ताभ्यामिति भावः। न प्रस्थितं न चलितं प्रियागमन नैराश्येन इति भावः। किन्तु व्याकुलितैव जातेत्यर्थः। तर्हि किं कृतवततीत्यर्थः। किन्तु रुषानवोढनीरजदृशान् वोढगनया कुञ्जोपकण्ठे प्रान्तप्रदेशेषु ताभ्यान्तः केनचित्प्रकारेण यद्वा तृषाव्याकुलायै भृङ्गाभ्रमरास्तिषां कदम्बवृन्दवृन्दनिकरं कदम्बकमित्यमरः। तेषां डम्बरमाडम्बरमारभदीति यावत्। तस्य चमत्काराश्चित्रजनका-विलासास्त्रान्सपशन्ती अङ्गीकुर्वन्ती तत्सदृशा इत्यर्थः। दृक्षयोदृक् पातान्यस्ताः परितः क्षित्राः परियस्यगमनं सम्भावयन्ती परितः क्षित्राः प्रियस्यगमनं सम्भावयती तदिदृक्षया परितो व्याकुलं दृष्टिपातं दृक्पातं प्रेरितवतीत्यर्थः। यद्वा विरहानले तत्क्षणमेव रम्यमपि लतागृहदावाग्निमिव सम्भावयन्ती परितः कातरसभयचकितं दृक्पातं प्रेरितवतीत्यर्थः। अत्र निदर्शनालङ्कारः।

विकास टीका की एक अन्य विलक्षणता यह है कि इसमें संक्षिप्त एवं सारगर्भित विवेचन है यद्यपि कुछ स्थानों पर प्रसंगानुसार विशद विवेचन भी मिलता है। इस प्रकार भानुदत्त के मूल शब्दों का तात्पर्य गोपालाचार्य की प्रतिपादन शैली द्वारा आनायास समझा जा सकता है। विकास टीका में प्राप्त उल्लेखानुसार गोपालाचार्य की माता का नाम लुखांबा तथा पिता का नाम नृसिंहाचार्य था। ये कौडिन्य गोत्र के ब्राह्मण थे।

श्रीनृसिंहाचार्य संज्ञं तातगुणगणान्वितम्।
गौरीमिव गुणैर्युक्ता लुखांबा च नमाम्यहम्।। विकास ७ ।।
गोपालात्मतनु नृसिंहतातयो गोपानामबुधः ।।११।।

वहीं इनके एक अन्य नाम बोपदेव का भी उल्लेख मिलता है। ग्रन्थ की समाप्ति में इन्होंने स्वयं लिखा है-

आचार्यापरनामायान् सुमतिमान् कौडिन्यगोत्रोङ्ग वा
गोपालस्तु इति बोपदेव गृह्णाति नामद्वयं
इतिनायं युगरन्ध्रे वेदधरणी गण्येगिरोवत्सरे
मञ्जर्यास्तु विकासतो विरचितो भूयाद् रतां भूतये ।।१।। श्रीरस्तु ।। (विकास २)।।

मंगलाचरण में प्राप्त श्लोकों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इसकी रचना महाराष्ट्र के जलगाँव में हुयी थी। गोपालाचार्य मूलरूप से दक्षिण भारत से थे। पाण्डुलिपि रसमञ्जरीविकास -१ में

इसके समय का उल्लेख नहीं है परन्तु रसमञ्जरीविकास - २ में विक्रम संवत् १७०२ तथा शक संवत् १५६७ का उल्लेख लेखक द्वारा किया गया है। जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह विक्रम संवत् १७०२ से पर्व की कृति है। क्योंकि यह स्पष्ट है कि वि.सं. १७०२ में इसे पुनः लिखा गया है। जिसमें स्थान का भी उल्लेख मिलता है-

संवत् १७०२ वर्षे शाके प्रवर्तमाने दक्षिणयनगते श्रीसूर्ये वर्षाऋतौ श्रावणमासे कृष्णपक्षे द्वितीयां तिथौ जोजयरामस्य आत्मजेन हरिजिदाख्येन रसमञ्जर्याः टीकायाः अवलोकनाय तथा परोपकृतये लिखिता। शुभं भवतु। राजनगरे लिखिता ।।श्रीः ।।

वहीं पी.के.गोडे ने इसका संभावित रचनाकाल १५७२ ए.डी. बताया है। सं.१४९४ उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है कि रसमञ्जरीविकास - २ हरजिद् नामक लेखकद्वारा पुनः लिखी गयी है। यह मध्यप्रदेश के राजनगर में लिखी हो यह संभव है क्योंकि इसके अन्त में लेखक ने स्वयं के कुछ उद्गार लिखे हैं जो कि उत्तर एवं मध्यभारतकी ही भाषा है -

उचेंहि नीचहिंरा उर बासे हैसे होई चांदकमासे।
सांहि कने हो कबहिक दीसे जैसे बादल गगन हि भासे।।

इसके अतिरिक्त इस प्रति में प्रकृत भाषा का प्रयोग भी ग्रन्थ समाप्ति पर लेखक द्वारा किया गया है। उपरोक्त आधार पर हम यह कह सकते हैं कि रसमञ्जरीविकास टीका के अध्ययन की आवश्यकता है जिससे हमें तत्कालीन लेखनशैली तथा साहित्य के विषय में अन्य विवरण मिल सके। साथ ही इस ग्रन्थ के अध्ययन से भानुदत्तकृत रसमञ्जरी को भी एक अन्य दृष्टि से समझा जा सके। उपरोक्त पाण्डुलिपि के आधार पर यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में साहित्य के प्रति लोगों की गहरी रुचि थी उन्हें व्यकरण एवं भाषा की समझ थी। पाण्डुलिपि के अन्तिम पृष्ठ पर लेखक के आत्मपरिचय से यह स्पष्ट होता है कि उन्हें एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान था। निश्चित रूप से यदि इसका अध्ययन किया जाये तो हम संस्कृत में लिखे गये उत्कृष्ट ग्रन्थों के अन्य पहलुओं को भी समझ सकेंगे तथा इन परिश्रमपूर्वक लिखे गये ग्रन्थों का संरक्षण कर सकेंगे।

सन्दर्भग्रन्थसूचिः

१. रसमञ्जरी (भानुदत्त) परिमल - रसामोदसहित, रामसुरेश त्रिपाठी, विवेक प्रकाशन, अलीगढ, १९८१.
२. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी. काणे, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९६६.
३. रसमञ्जरीविकास टीका गोपालाचार्य, पञ्जी.सं. ८१०७, प्राच्यविद्यामन्दिर, बडौदा।
४. रसमञ्जरीविकास गोपालाचार्य, पञ्जी.सं. ७१८८, प्राच्यविद्यामन्दिर, बडौदा।
५. P.K. Gode, ABORI, Pune XVI 1934-35, pp. 145-147.

६. De Shushilkumar, History of Sanskrit Poetics, Oriental Book Centre, Delhi, 2006.

७. An Alphabetical List of Manuscripts in the Oriental Institute, Baroda, Vol. II, 1999.

८. Rasamanjari- The Nectous Ocean, OmkarRahi, National Publishing House, Delhi, 2008.

९. New Catalogue Catalogoram Vol. XXIII, University of Madras, Madras.